एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
सच पुराणा होवै नाही - सीता कदे न पाटै । नानक साहिब सचो सचा - तिचर जापी जापै ।
साहिब मेरा नीत नवा - सदा सदा दातार । सच पुराणा ना थीऐ - नाम न मैला होइ ।
आद सच - जुगाद सच । है भी सच - नानक होसी भी सच ।
Www.9009.co.in

"The Final Truth" (आखिरी सच)

1. सच पुराणा होवै नाही – सीता कदे न पाटै । नानक साहिब सचो सचा – तिचर जापी जापै ।

अर्थ:- प्रभु का नाम - सच-(रूपी पटोला) कभी पुराना नहीं होता, (नाम से) सिला हुआ कभी फटता नहीं (उस प्रभु से जुड़ा हुआ मन उससे कभी टूटता नहीं) । हे नानक ! प्रभु-पति सदा कायम रहने वाला है, पर इस बात की समझ तब ही पड़ती है जब उसको स्मरण करें ।

वेल पिंजाइआ - कत वुणाइआ । कट कुट कर - खुमब चड़ाइआ ।

अर्थः- (रूई को बेलने में) बेल के पिंजाई की जाती है, कात के (कपड़ा) बुना जाता है, इसके टुकड़े करके (धोने के लिए) साँचे में चढ़ाते हैं ।

लोहा वढे दरजी पाड़े - सूई धागा सीवै । इउ पत पाटी सिफती सीपै - नानक जीवत जीवै ।

अर्थः- (इस कपड़े को) कैंची कतरती है, दर्जी इसे चीरता है, और सूई-धागा सिलता है । (जैसे ये कटा हुआ फाड़ा हुआ कपड़ा सुई-धागे से सिला जाता है) वैसे ही, हे नानक ! मनुष्य की खोई हुई इज्जत प्रभु की महिमा करने से फिर बन जाती है और मनुष्य सदाचारी जीवन गुजारने लग जाता है ।

होइ पुराणा कपड़ पाटै - सूई धागा गढै । माह पख किहु चलै नाही - घड़ी मुहत किछ हंढै । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 955)

अर्थः- कपड़ा पुराना हो के फट जाता है, सुई-धागा इसको सी देता है, (पर ये सिला हुआ मरम्मत किया हुआ पुराना कपड़ा) कोई महीना आधा महीना नहीं चलता, सिर्फ घड़ी दो घड़ी (थोड़े वक्त) ही चलता है ।

a. साहिब मेरा नीत नवा - सदा सदा दातार । (660)

अर्थः- मेरा प्रभु और स्वामी सदैव नया है; वह सदैव सर्वदा दाता है । मेरा मालिक सदा बख्शिशें करता रहता है (पर वह मेरी रोज के तरले सुन के उकताता नहीं, बख्शिशों में) नित्य यूँ है जैसे पहली बार ही बख्शिशें करने लगा है ।

b. सच पुराणा ना थीऐ - नाम न मैला होइ । गुर के भाणे जे चलै - बहुड़ न आवण होइ । नानक नाम विसारिऐ - आवण जाणा दोइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1248)

अर्थः- (हे भाई ! यदि मनुष्य सदा-स्थिर परमात्मा के साथ प्यार डाल ले तो) परमात्मा के साथ बना हुआ वह प्यार कभी कमजोर नहीं होता । (जिस हृदय में) परमात्मा का नाम (बसता है, वह हृदय कभी) विकारों से गंदा नहीं होता । अगर मनुष्य गुरु की रज़ा में चले तो दोबारा उसको जनम (मरन का चक्कर) नहीं होता । हे नानक ! अगर नाम बिसार दें तो जनम-मरीण दोनों बने रहते हैं (भाव, जनम-मरण के चक्करों में पड़े रहते हैं) ।

2. एकंकार इकांग लिख - ऊड़ा ओअंकार लिखाइआ । सतिनाम करता पुरख - निरभउ हुइ निरवैर सदाइआ ।

अर्थः- इक दा सरूप इकांग लिखके ऊड़े (अखर) तों ओअंकार लखा दिता है । (उस दा) नाम सचा है, उह सिरजणहार व्यापक है, (उस ने) निरभउ अते निरवैर नाम रखाइआ है (किउं जो राग द्वेख ही भय ते वैर दा कारण हन, ओह इन्हां उपाधीआं तों रहित होण दे कारण निरभउ निरवैर है) ।

अकाल मूरत परतख सोइ – नाउ अजूनी सैभं भाइआ ।
गुरपरसाद स आद सच – जुगह जुगंतर होंदा आइआ ।

(भाई गुरदास वर्णन – 39-1-1)

अर्थः- उस (परमात्मा नू) परतख (होण कर के फेर) अकाल मूरति, अजूनी सैभं नाम (कहाउणा) भाइआ ("काल रहित अनकाल सरूपा"। अजोनी = योनियों से रहित, जो जन्म में नहीं आता, सैभं= स्वयंभू (स्व = स्वयं। भं = भू) अपने आप से होने वाला, जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है) । (फिर उह कैसा है?) वडा है, क्रिपा सरूप है (या गुरू क्रिपा नाल प्रापनीय है) आदि विच सच, जुगां जुगंतरां (तों त्रिकाल अबाध सरूप इक रस) हुंदा चला आया है ।

a. आद सच – जुगाद सच । है भी सच – नानक होसी भी सच ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 1)

अर्थः- हे नानक ! अकाल पुरख आरम्भ से ही अस्तित्व वाला है, युगों के आरम्भ से मौजूद है । इस समय भी मौजूद है और आगे भी अस्तित्व में रहेगा ।

(पाठी मां साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

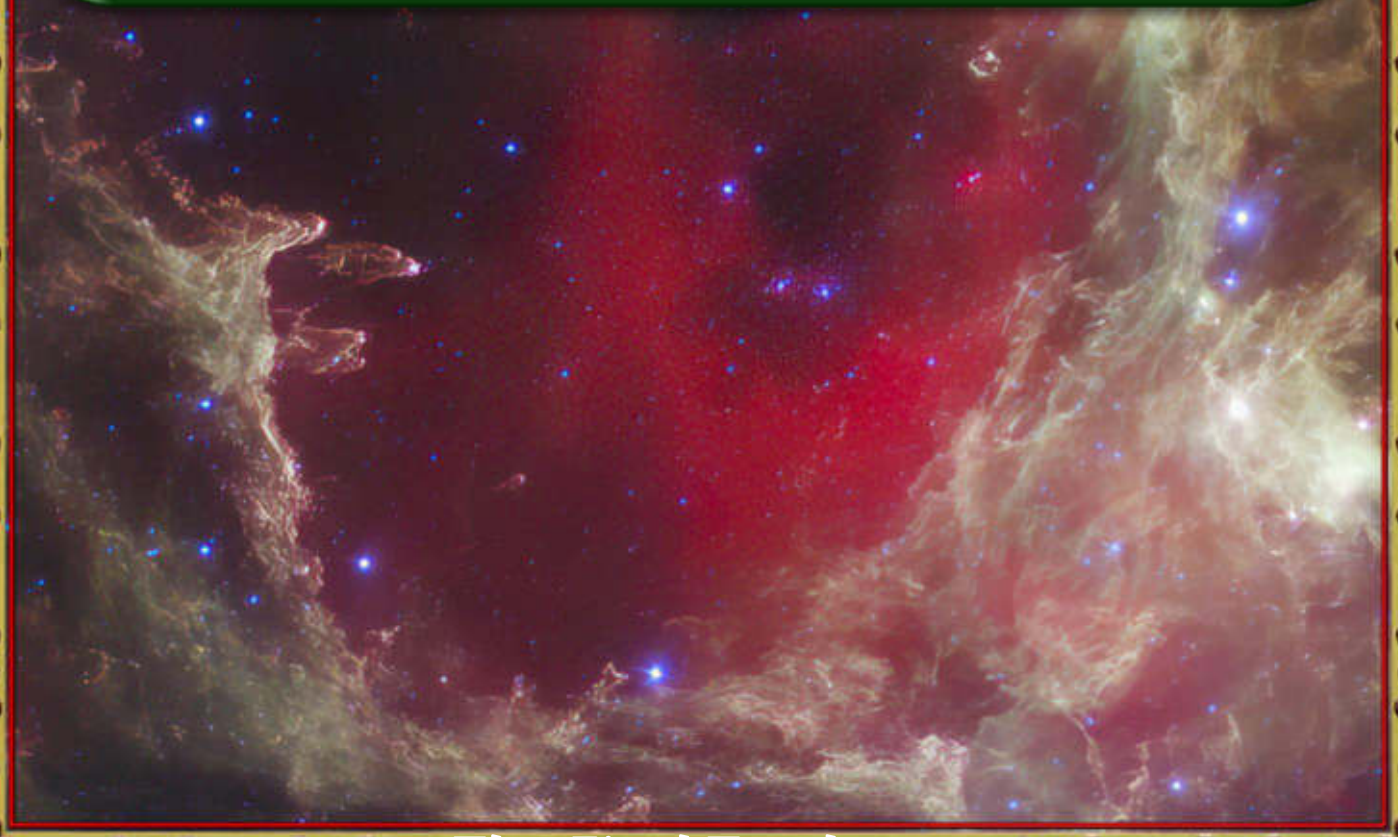

एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपौ
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
सतसंग
सच पुराणा होवे नाही - सीता कदे न पाटे । नानक साहिब सचो सचा - तिचर जापी जापे ।
साहिब मेरा नीत नवा - सदा सदा दातार । सच पुराणा ना थीऐ - नाम न मैला होइ ।
आद सच - जुगाद सच । है भी सच - नानक होसी भी सच ।
Www.9009.co.in